श्री बीतक साहेब

संयोजक

'धर्मवीर' 'जागनी रत्न'

श्री जगदीश चन्द्र जी आहूजा

संरक्षक एवम् प्रकाशक

श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

"अथ तीनों सरूपों की बीतक लिखते" सब ग्रंथों के प्रमाण सहित।

जिस पारब्रह्म अक्षरातीत, उत्तम पुरुष, सच्चिदानंद की पहचान या उनके धाम या लीला के बारे में आज दिन तक किसी भी देवी देव, तीर्थंकर, अवतार, ऋषि मुनि, भक्त या त्रिदेवा आदि नारायण तक ने भी एक शब्द नहीं कहा बल्कि नेति–नेति और निगम–निगम कह कर थक गए, उनका आना 28वें कलयुग में होगा। बुद्ध निष्कलंक अवतार, आखरूल जमा इमाम मेहंदी के रूप में प्रकट होकर वह खुद अपनी, अपने धाम एवं स्व लीला की पहचान संसार के सब धर्म ग्रंथों का एकीकरण कर–कराएगा। वही पारब्रह्म होगा। उनके तीन स्वरूपों (बसरी,मलकी और हकी) की बीतक यह है।

भविष्य पुराण में, राजा कहे जुग चार ।
वचन जो है व्यास के, ताको करो विचार ।।1।।

इस विषय को सतयुग में पारब्रह्म ने स्वयं ही अपने हुक्म द्वारा कुरान, पुराण सब धर्म ग्रंथों में लिखवाया था, जिसका वर्णन ऐसे है। शिव जी महाराज ने उमा जी को कैलाश पर्वत पर जो अमर कथा सुनाई थी, जिसके सुनने व मनन करने से हर प्राणी अखंड होता है, जिसका वर्णन महेश्वर तंत्र में है और उस कथा को सुकदेव जी ने सुना और व्यास जी ने अपने भविष्य पुराण ग्रंथ में लिखा, वह इस प्रकार है:–

शिव जी ने जो पारब्रह्म के आने का ज्ञान सुनाया, वह 28वें कलयुग में आना कहा था मगर कथा सतयुग में सुनाई थी तो उमा ने पूछा प्रभु! वह समय कब आएगा तो व्यास जी ने सतयुग से लेकर त्रेता, द्वापर व कलयुग के कितने राजा बीतेंगे और उनका क्या नाम होगा यह बताया और कहा फिर वह पारब्रह्म बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में प्रकट होंगे।

सत्रह राजा सतजुग में, एक कहयो राजा कृत ।
तिन अपनी भुगती, तापर भयो कृतदत्त ।।2।।

सत्रह राजा सतयुग में होंगे जिनके नाम इस प्रकार हैं:– पहला राजा कृत जब राज कर लेगा तो उसका पुत्र कृतदत्त होगा।

ता ऊपर अंत भयो, फेर मुचकुन्दभा होय ।
ता ऊपर भैरवानंद, राजा कम्भो कहयो सोए ।।3।।

फिर अंत, चौथा मुचकुन्दभा, पांचवा भैरवानंद और छठा कुम्भो होगा ।

ता ऊपर आदि भयो, फेर हरनाकुस कहयो नाम ।
ता ऊपर ताके ठौर, प्रहलाद भयो इस ठाम ।।4।।

उसके बाद आदि, सातवां हरनाकुस आठवां, नौवां हरनाकुस का पुत्र प्रहलाद होगा।

Jh eq[k chrd lkgsc th

ता ऊपर बलिलोचन, तापर बलिभोगत ।
इन्हों अपनी भुगती, लोचनबलि इत ।।10।।

बलिलोचन दसवां, बलिभोगत ग्यारहवां, लोचनबलि बारहवां राजा होगा।

ता ऊपर बानासुर, तापर कपिलाक्ष नाम ।
कपिलभद्र तापर भयो, जरासरी इस ठाम ।।6।।

फिर बानासुर तेरहवां, कपिलाक्ष चौदहवां, कपिलभद्र पंद्रहवां, सोलहवां जरासरी होगा।

तापर धूमऋषि कहयो, ए सत्रह सतजुग के ।
अब कहों त्रेता के, उनतीस नाम भये ।।7।।

फिर सतयुग के अंत मे सत्रहवां राजा धूमऋषि होगा, फिर त्रेतायुग होगा। उसके भी जब उनत्तीस राजा राज कर लेंगे, तब द्वापर युग प्रारंभ होगा।

प्रथम तो ब्रह्मा भयो, तापर मारीच नाम ।
तापर कश्यप भयो, फेर सूरज इस ठाम ।।8।।

त्रेता युग का पहला राजा ब्रह्मा, दूसरा मारीच, तीसरा कश्यप, चौथा सूरज होगा।

तापर तवछत्र भयो, तापर अक्षयभा नाम ।
ता ऊपर अरण्यभा, विश्वामित्र इस ठाम ।।9।।

फिर तब पांचवां तवछत्र, फिर छठा अक्षयभा, सातवां अरण्यभा, आठवां विश्वामित्र होगा।

फेर महामंत्र भयो, तापर भयो चिमन ।
ता ऊपर राजा भयो, नाम भद्र उदवन ।।10।।

नौवां महामंत्र, दसवां चिमन, ग्यारहवाँ भद्र उदवन होगा।

तापर त्रिसंख भयो, तापर हरिश्चन्द्र होय ।
तापर रोहितास नाम, मानधाता कहयो सोए ।।11।।

बारहवां त्रिसंख, तेरहवां हरीश्चंद्र, चौदहवां उसका पुत्र रोहितास, पंद्रहवां मानधाता होगा।

फेर राजा सगर भयो, फेर आसा मित्र नाम ।
तापर भगीरथ भयो ,दिलीप जो इस ठाम ।।12।।

सोलहवां राजा सगर ,सत्रहवां आसामित्र, अठारहवां भगीरथ और उन्नीसवां राजा दिलीप होगा।

तापर रघु भयो, फेर अज इस ठाम ।
तापर भयो दसरथ, फेर रामचंद्र नाम ।।13।।

बीसवां रघु, इक्कीसवां अज, बाइसवां दशरथ, तेइसवें रामचंद्र होंगे।

तापर लव भयो, तापर अंतभान ।
तापर कयलखी, तापर बबरबान ।।14।।

चौबीसवें उनके पुत्र लव, पच्चीसवां अंतभान, छब्बीसवां कयलखी, सत्ताइसवां बबरबान होगा।

ता ऊपर सुदरसन, तापर अग्निवरन ।
ए उनतीस त्रेता मिने, भये राजा ऊपर धरन ।।15।।

अठाइसवां सुदर्शन, उनतीसवां राजा अग्निवर्ण जब धर्म के आधार पर राज कर लेगा तो द्वापर युग आ जाएगा। हे उमा! अब द्वापर युग में जो उन्नीस राजा राज करेंगे उनके नाम सुनो।

उनैस भये द्वापर में, प्रथम इन्द्र नाम ।
तापर भयो चन्द्रमा, फेर पूरवा राजा इस ठाम ।।16।।

द्वापर युग के पहले राजा का इंद्र, दूसरे का चंद्रमा, तीसरे का पुरूखा नाम होगा।

अय राजा तापर भयो, निरमोक्ष तापर होय ।
तापर सान्तनु भयो, चित्र राजा कहयो सोए ।।17।।

चौथा राजा अय नाम का, पांचवा निरमोक्ष, छठा सान्तनु, सातवां चित्र नाम का राजा होगा।

तापर विचित्र भयो, तापर भयो व्यास ।
ता ऊपर पांडव भयो, फेर अर्जुन राजा आस ।।18।।

आठवां विचित्र, नौवें राजा व्यास होंगे, दसवां राजा पाण्डु, ग्यारहवां राजा अर्जुन होगा।

तापर अहिवरन कुमार, फेर सेत्रनख नाम ।
ता ऊपर संतन भयो, वलीवान इस ठाम ।।19।।

बाहरवां अहिवरण कुमार, तेरहवां सेत्रनख, चौदहवां संतन, पंद्रहवां वलीवान होगा।

Jh eq[k chrd lkgsc th

तापर निरवान भयो, तापर बलिचंद होय ।
तापर परीछित भयो, फेर जनमेजय कहयो सोए ।।20।।

फिर सोलहवां निरवान, सत्रहवां बलिचंद्र, अट्ठारहवां परीक्षित, उन्नीसवां परीक्षित का पुत्र जन्मेजय होगा तो फिर अट्ठाइसवां कलियुग प्रारंभ होगा जिसमें बीस राजाओं के राज करने के बाद पारब्रह्म बुद्ध निष्कलंक अवतार आएंगे।

अब कहों बीस कलिजुग के, उन्नीस कहे द्वापर ।
उनतीस त्रेता के कहे, सत्रह सतजुग पर ।।21।।

हे उमा! मैंने आपको उन सत्रह राजा सतयुग के, उनतीस त्रेता के व उन्नीस द्वापर के जो राज करेंगे उनके नाम सुनाए हैं। अब बीस कलयुग के राजाओं के नाम सुनो।

अब कहों कलिजुग के, प्रथम तो जदु नाम ।
ता ऊपर अजयपाल, फेर महिपाल इस ठाम ।।22।।

पहले राजा का नाम जदु, दूसरा अजयपाल, तीसरा महिपाल नाम का राजा होगा।

तापर गन्धर्वसेन, वीर विक्रमादित्य ।
तापर विक्रमाचक्र, फेर भोज कहयो सावित ।।23।।

चौथा राजा गंधर्वसेन, पांचवा वीर विक्रमादित्य, छठा उसका पुत्र विक्रमाचक्र व सातवां राजा भोज होगा।

तापर गौरी पादसाह, सुलतान अलाउद्दीन नाम ।
ता-ऊपर नसीरूदीन, लोढ़ा महमूद इस ठाम ।।24।।

आठवां बादशाह गौरी मुसलमान होगा, नौवां अलाउद्दीन, दसवां नसीरुद्दीन, ग्यारहवां लोड़ा महमूद होगा ।

तापर बड़ा महमूद, तापर सूरखां होए ।
तैमूरलिंग तापर भयो, बावर कह्यो सोय ।।25।।

फिर बारहवां बादशाह महमूद, तेरहवां सूरखां, चौदहवां तैमूरलिंग, पन्द्रहवां बादशाह बाबर राज करेगा।

ता ऊपर हुमायुं, ता ऊपर अकबर ।
ता ऊपर सलीम साह, साहजहां तिन पर ।।26।।

सोलहवां बादशाह हुमायूं, सत्रहवां अकबर, अट्ठारहवां उसका पुत्र सलीम, उन्नीसवां शाहजहां नाम का बादशाह होगा ।

ता ऊपर औरंगजेब, ए कलियुग के नाम ।
आगे अवतार होयगा, बुद्ध कलंकी इस ठाम ।।27।।

हे उमा ! बीसवां बादशाह औरंगजेब (शाहजहां का पुत्र) जब राज करेगा, उसके राजकाल में बुद्ध निष्कलंक का जो अवतार होगा, उसमें ही पारब्रह्म की शक्ति प्रगट होगी और इसलिए उसको बुद्ध निष्कलंक कहा है क्योंकि वह अपने साथ परा शक्ति अर्थात् जाग्रत बुद्ध का ज्ञान लेकर आएंगे। जिसके बिना आज दिन तक सारी दुनियां उस पारब्रह्म का वर्णन करने में असमर्थ थी। वो जाग्रत बुध के ज्ञान को लाने वाला अवतार होगा इसलिए वह बुद्ध निष्कलंक अवतार होगा।

श्री महामति कहे ऐ साथ जी, सास्त्र कहें यों कर ।
आगे अपनी बीतक, सो लीजे चित धर ।।28।।

अब बड़े मत के धनी स्वयं इन शास्त्रों के प्रमाण से अपनी पहचान करा रहे हैं कि अब वही अट्ठाईसवां कलियुग और औरंगजेब का राज्य है और मैं वही बुद्ध निष्कलंक अवतार पारब्रह्म का स्वरूप हूं। ऐ मेरे सुन्दरसाथ जी! ये तो शास्त्रों से पहचान हुई कि मैं ही पारब्रह्म हूं और अब आगे मेरी और आपकी वो बातें हैं जो परमधाम में हुई थी। अब उन बातों को सुन कर हृदय में विचार करो।

प्रकरण 1 चौपाई 28

महाकारण

अब कहों फेर के, मूल मिलावे की बीतक ।
जैसी आज्ञा धनी की, सो बातें बुजरक ।।1।।

ऐ मेरे परमधाम की आत्माओं, मेरे प्यारे सुन्दर साथ जी! अब मैं आपको फिर दोबारा उस परमधाम में खिलवत खाने मूल मिलावे में बैठ कर, जो बातें की थी कि हमारा ही इश्क बड़ा है और हमें आपकी साहेबी भी देखनी है ऐसे वार्तालाप के पश्चात् जो अद्भुत और कहनी से परे की बातें हैं, जो किसी ने आज दिन तक न कही हैं न सुनी हैं वह सारी बातें तुम्हें उस परमधाम की सुना कर तुम्हें तुम्हारी हकीकत,तुम्हारे धनी व परमधाम की पहचान कराता हूं।

पहले मूल अद्वैत में, भोम जहाँ इस्क ।
तहां प्रेम रबद में,भया हुकम हक ।।2।।

सर्वप्रथम उस मूल अद्वैत भूमि, जहां अखंड परमधाम में पारब्रह्म की स्वलीला अद्वैत होती है अर्थात् जहां इश्क ही इश्क की भूमि है व इश्क का ही व्यवहार है और वहां इश्क के वार्तालाप में ही हमको मिथ्या माया के दिखाने का, हमारे धनी का कैसे हुकम हुआ और हम कैसे यहां आए उसका वर्णन सुनाता हूं।